

“ल्याम्नोचाए” सदन की विचित्र कथाएं (३)

ल्याम्नोशान पर्वत का ताम्नो ऋषि





लाम्प्रोशान पर्वत का ताम्रो ऋषि

रूपान्तरकार : छाम्रो च्वोरुइ

चित्रकार : तू ताखाए



विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह पेइचिङ

प्रथम संस्करण १९८४

प्रकाशक : विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
२४ पाएवानच्चाड मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : जातीय मुद्रणालय

वितरक : चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र (क्वोची शूत्येन)
पो. ग्रा. बाक्स ३६६, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित



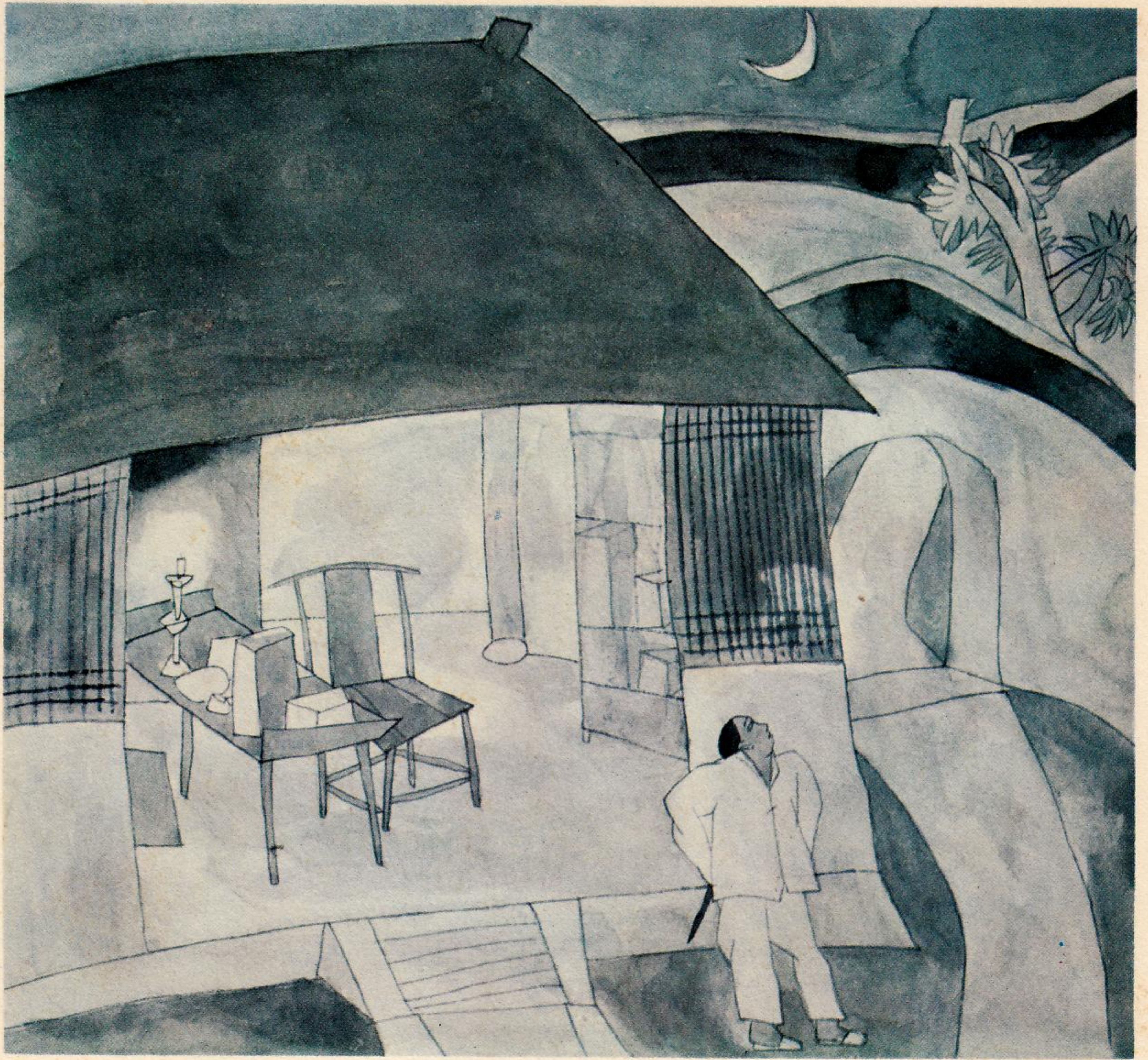
१. बहुत पहले शानतुड प्रान्त के चिछ्वान शहर में वाड छी नामक एक अमीर आदमी रहता था । उसके पूर्वज राजदरबार के बड़े-बड़े अफसर थे, इसलिए वे अपने पीछे बहुत-सी जमीन-जायदाद छोड़ गए थे, जो सारी की सारी वाड छी को विरासत में मिली थी । इसके अलावा उसके पास एक आलीशान मकान भी था ।



२. वाङ्छी के घर में बहुत-सी पुरानी साहित्यिक किताबें भी थीं, इसलिए उसका परिवार “पढ़े-लिखे लोगों के परिवारों” में गिना जाता था।



३. लेकिन बाड़ छी स्वयं बहुत आलसी व आरामपसन्द था । इसलिए जब अपने पुरखों की जमीन-जायदाद उसके हाथ में पड़ी, तो उसने ऐश-आराम की जिन्दगी बिताने में उसे उड़ा डाला । बाद में उसने सोचा : “पुस्तकें पढ़ने से मैं बहुत बड़ा अफसर बन जाऊंगा । मेरे पास धन की कोई कमी नहीं रहेगी और विद्वान होने के नाते मुझे एक सुन्दर पत्नी भी मिल जाएगी । मैं जरूर मेहनत से पढ़ूंगा ।”



४. वह किताबों में डूब गया, लेकिन लगातार पढ़ते रहने से पहले ही दिन उसकी कमर दुखने लगी और अगले दिन उसका सिर चंकराने लगा। उसने अपनी किताब एक तरफ फेंक दी और कहा : “उफ़ ! जिन्दगी में नाम कमाना भी कितना कठिन है !”



५. अचानक उसे याद आया कि बुजुर्गों ने बताया था कि पूर्वी समुद्रतट पर लाओशान नामक एक पर्वत है, जहां अनेक देवी-देवता आते-जाते रहते हैं। उसने सोचा : “क्यों न मैं भी वहां जाकर किसी देवता से जादूगरी सीख लूं? अगर मैं जादूगरी सीख गया, तो बाद में मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी और मैं जब चाहूंगा, धन प्राप्त कर लूंगा।”



६. उसके रिश्तेदारों व मित्रों ने उसे वहां न जाने की सलाह दी। उसकी पत्नी ने भी बार-बार उसे समझाया कि वह वहां न जाए। लेकिन उसने किसी की न मानी और अपना बिस्तर पीठ पर लादकर बड़े विश्वास के साथ लाओशान पर्वत की ओर चल पड़ा। उसने कसम खाई कि वह जादूगरी सीखकर ही वापस लौटेगा।



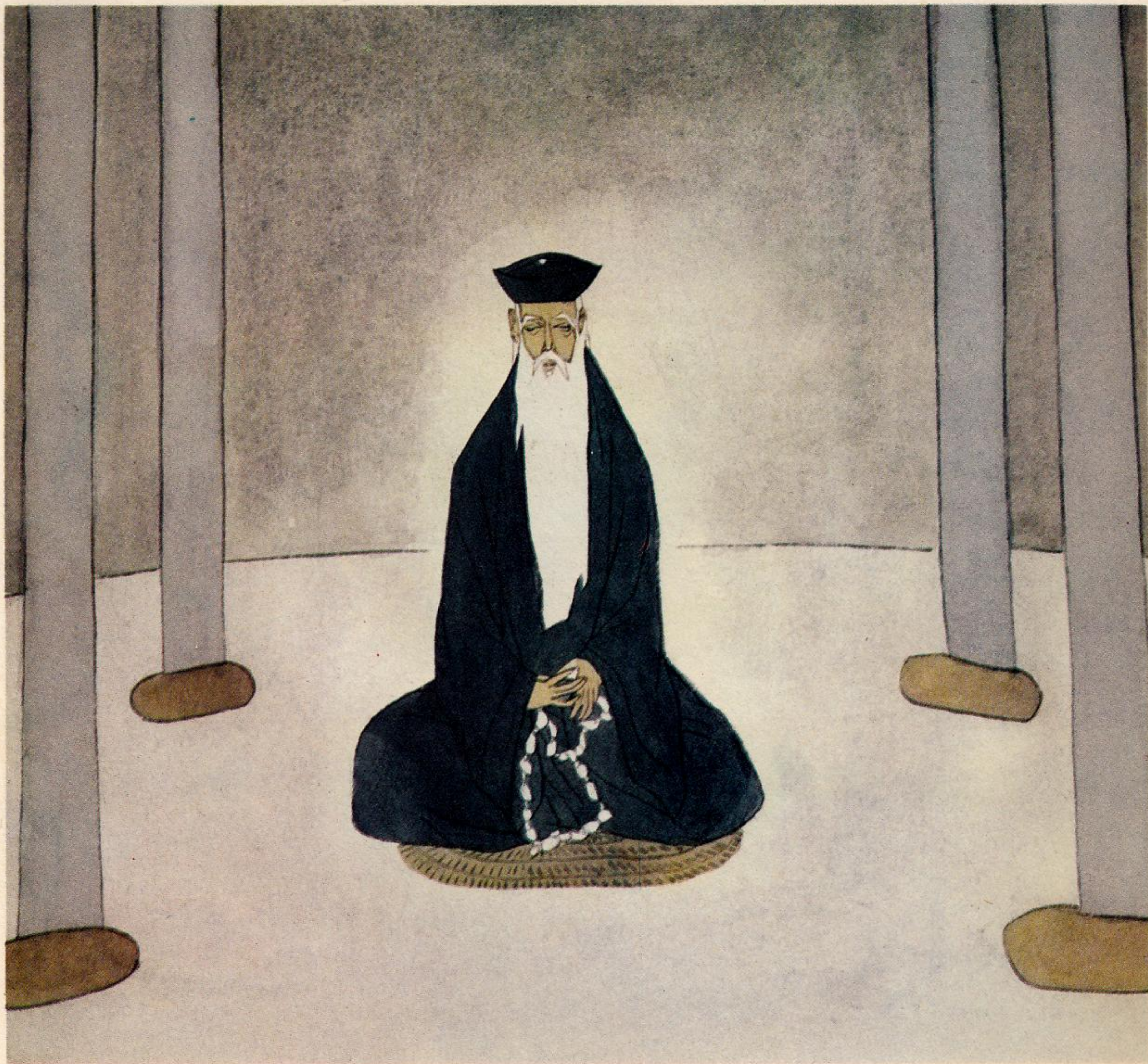
७. वह बड़े जोश के साथ खाना हुआ । रास्ते में उसने कई नदियों और पहाड़ों को पार किया । कुछ ही दिनों में वह लाम्बोशान पर्वत की तलहटी में पहुंच गया ।



८. सफेद बादलों ने उस पहाड़ को चारों ओर से घेर रखा था और बादलों के बीचोंबीच एक ताग्रो मंदिर दिखाई दे रहा था ।



६. वाङ्छी बहुत खुश हुआ और सफर की थकान बिलकुल भूल गया। उसके पैरों में फिर ताकत आ गई और वह एक ही सांस में पर्वत की चोटी पर चढ़ गया। वहां का रमणीक दृश्य देखकर वाङ्छी ने मन ही मन कहा कि यह सचमुच देवी-देवताओं के ठहरने का एक अच्छा स्थान है।



१०. वाङ्छी मंदिर के मुख्य भवन में दाखिल हुआ। वहां उसने देखा कि ताग्रो धर्म का एक ऋषि आसन पर बैठा ध्यान में डूबा हुआ है। उसकी लम्बी सफेद दाढ़ी नीचे तक लटकी हुई थी। यह देखकर वाङ्छी का मन श्रद्धा से भर गया।



११. वाङ्छी ने घुटनों के बल झुककर ऋषि को प्रणाम किया और उससे विनती की कि वह उसे अपना शिष्य बना ले। ऋषि ने अपनी आंखें खोलीं और कुछ पल उसकी ओर देखकर फिर बन्द कर लीं, लेकिन मुंह से वह कुछ भी नहीं बोला। तब वाङ्छी ने अपनी प्रार्थना दोहराई।



१२. ऋषि ने कहा : “तुमको अपना शिष्य बनाने में मुझे कोई एतराज नहीं है । लेकिन तुम बहुत नाजुक लगते हो और यहां का कठोर जीवन बिता नहीं पाओगे ।” वाङ्छी ने कसम खाकर कहा : “मैं किसी भी तरह का कठोर जीवन बिता सकता हूं !”



१३. इस ताओ कृषि के अनेक शिष्य थे । वे शाम को बाहर से लौट आए । बाडू छी ने उन्हें नमस्कार किया । तब से वह इस मंदिर में उनके साथ रहने लगा ।



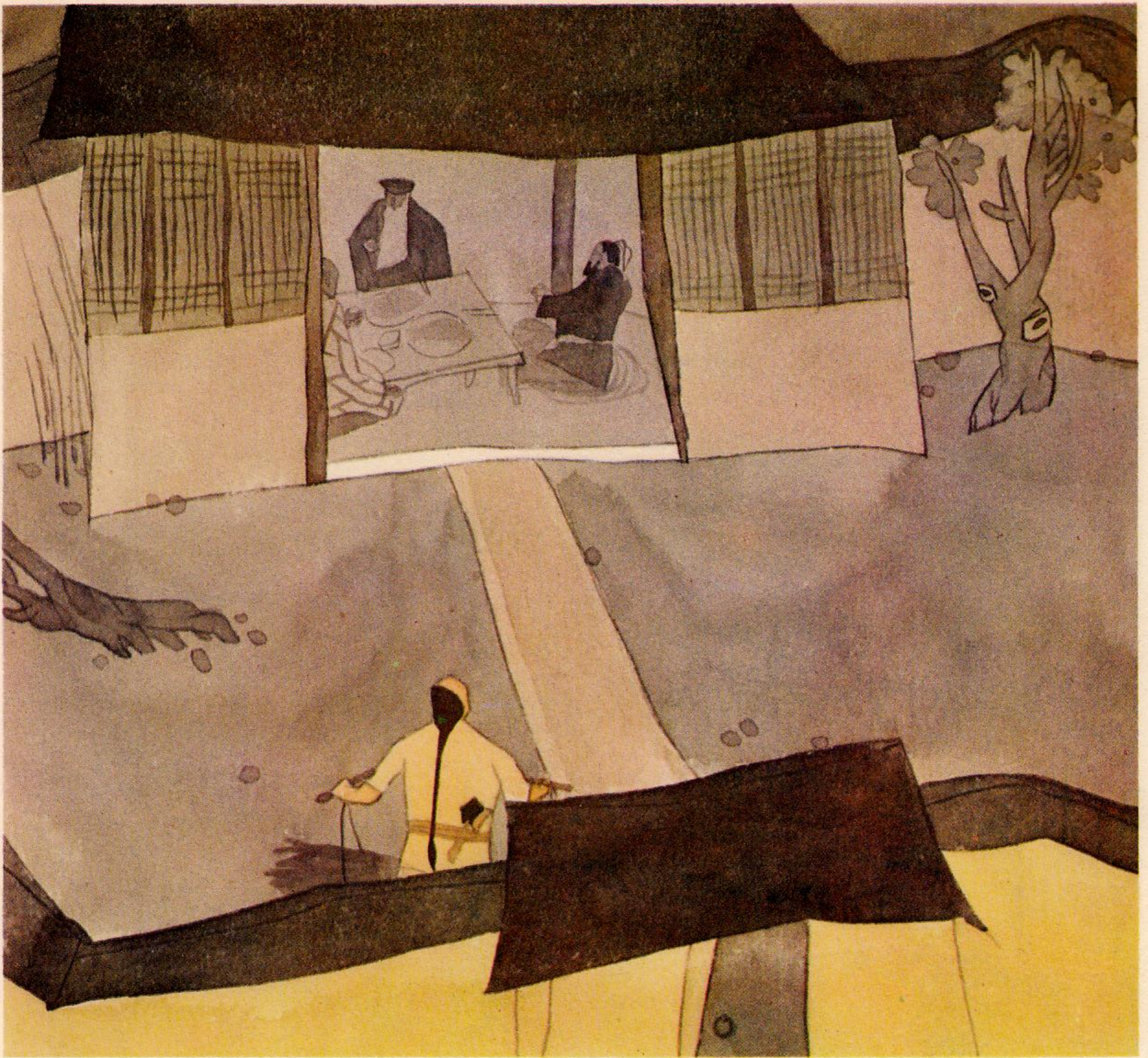
१४. अगले दिन तड़के ही ऋषि ने वाङ्छी को एक कुल्हाड़ी दी और कहा : “तुम इन लोगों के साथ ईधन की लकड़ी काटने जाओ।” वाङ्छी ने खुशी से उसकी आज्ञा मान ली।



१५. वाड छी ने अपने घर में इस प्रकार का काम कभी नहीं किया था । इसलिए जल्दी ही उसके हाथों में छाले पड़ गए । पहाड़ पर चढ़ने से उसके दोनों पैर पहले ही सूज गए थे और अब उसका पूरा शरीर भी टूटने लगा । फिर भी वह दृढ़ता से लकड़ी काटता रहा और मन ही मन सोचता रहा : “मैं केवल कठोर परिश्रम के द्वारा ही दूसरों से आगे बढ़ सकूंगा । मैं इन कठिन परिस्थितियों में जरूर तप करूंगा ।”



१६. इस तरह सख्त मेहनत करते हुए उसने अपना पहला और दूसरा दिन काटा । जल्दी ही एक महीना बीत गया । उसका रोज का काम था ईंधन की लकड़ी काटना । लेकिन धीरे-धीरे इस प्रकार का कठोर जीवन उसके लिए असहनीय हो गया । उसने सोचा : “अगर मुझे यहां ऐसा ही कठोर जीवन बिताना पड़ा, तो अपने घर लौटना इससे कहीं अच्छा होगा ।” इसलिए उसने मन ही मन तय कर लिया कि वह अगली सुबह चुपचाप पहाड़ से उतरकर अपने घर लौट जाएगा ।



१७. उसी शाम मंदिर में लौटकर उसने देखा कि ताओ कृषि अपने दो मेहमानों के साथ शराब पी रहा है। उस समय मंदिर के मुख्य भवन में अंधेरा हो चुका था।



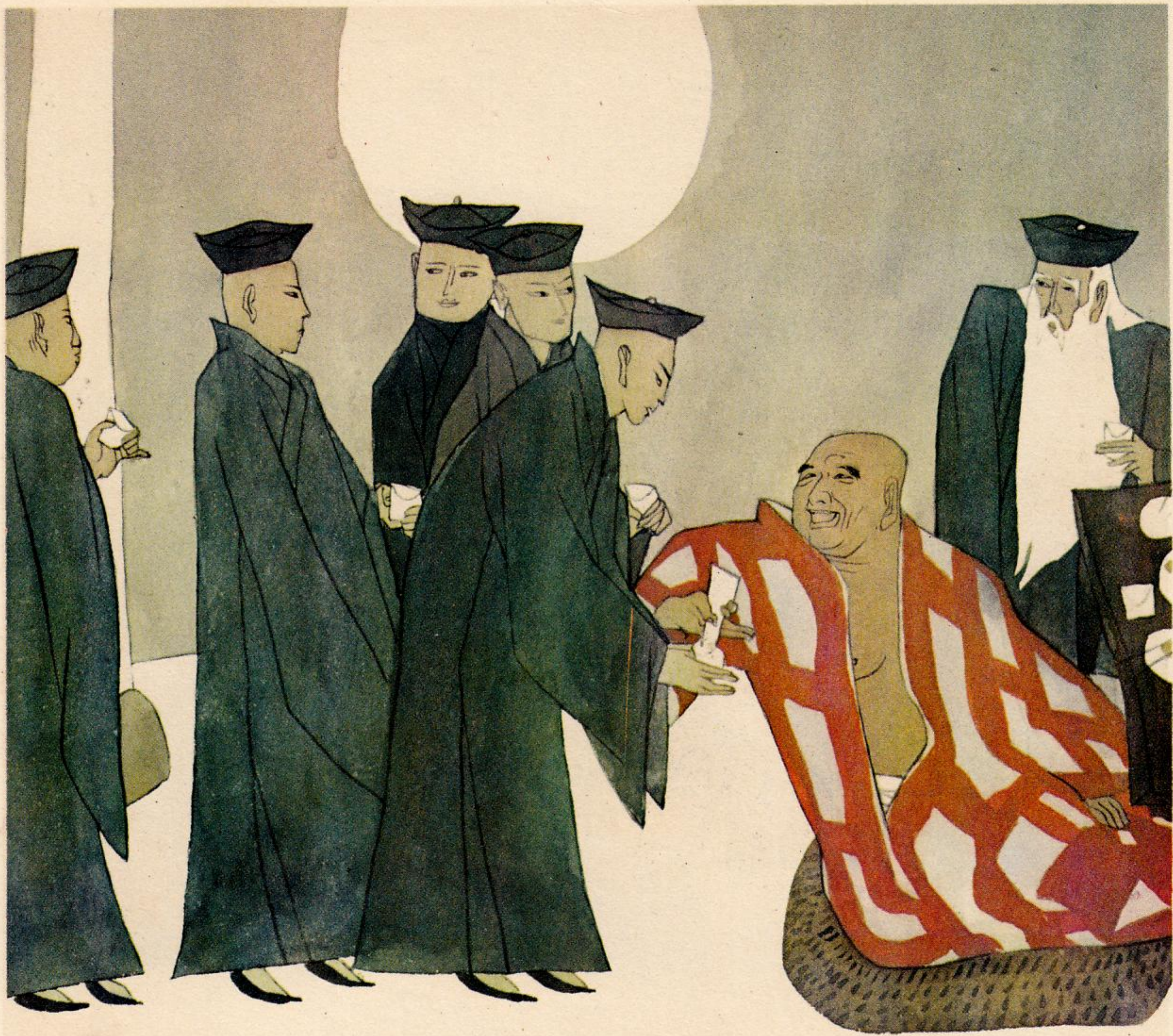
१८. ऋषि ने अपने शिष्य से दीप जलाने को नहीं कहा, बल्कि कैंची से सफेद कागज के एक टुकड़े को काटकर चांद की तरह की गोलाकार चीज बनायी और दीवार पर चिपका दी ।



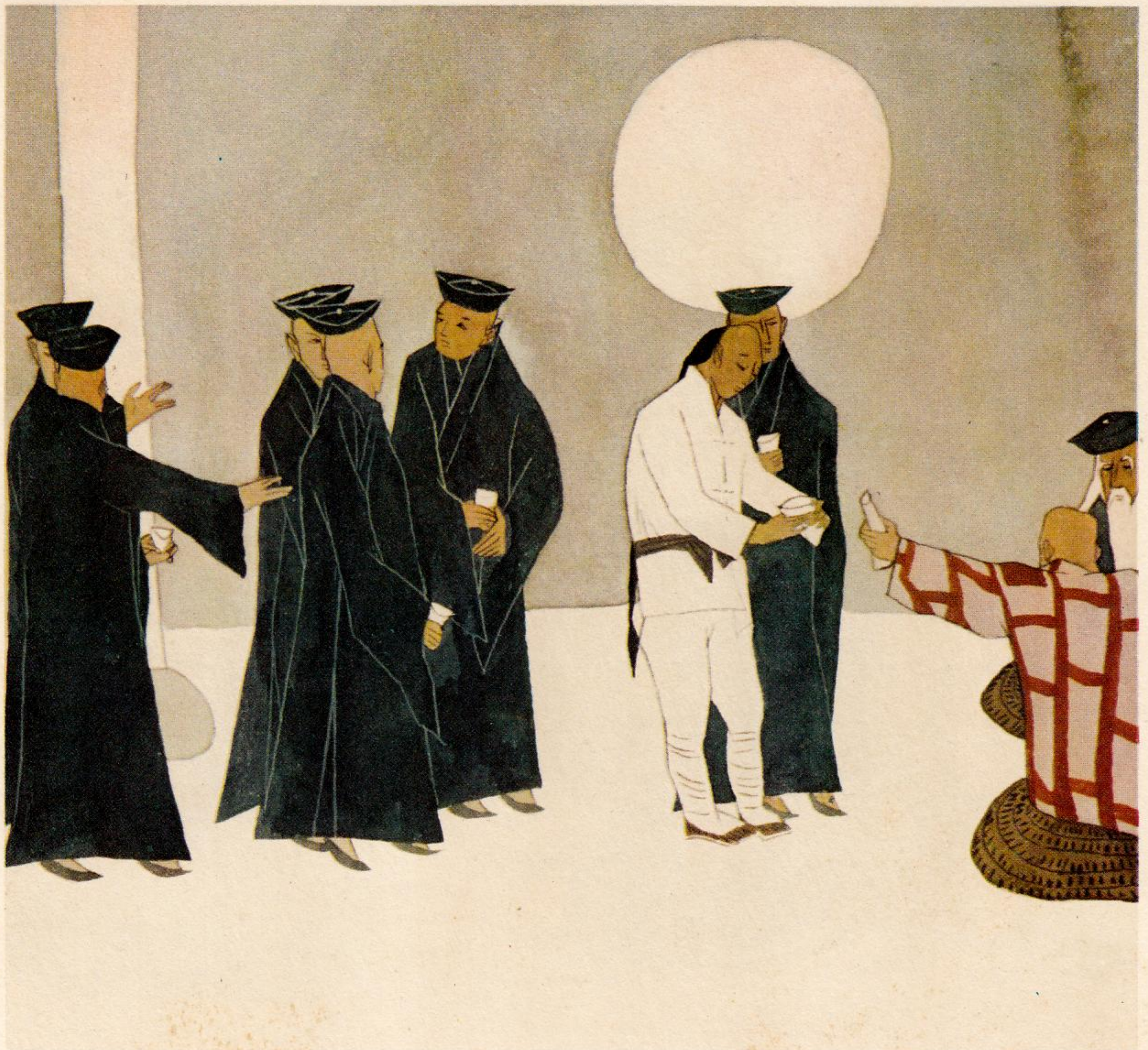
१६. ऋषि द्वारा उसे दीवार पर चिपकाते ही वह फौरन चांद में बदल गयी । वहां मौजूद लोगों की भाँहें और दाढ़ियां चांदनी में साफ-साफ दिखाई देने लगीं । वाङ्छी ने ऐसा चमत्कार पहले कभी नहीं देखा था, इसलिए वह चकित रह गया ।



२०. ऋषि के शिष्य उसकी सेवा के लिए पास ही खड़े थे। तभी एक मेहमान ने कहा : “आज की चांदनी रात बहुत सुहावनी है। हम सब बहुत खुश हैं; क्यों न कुछ मनोरंजन करें?”



२१. ऋषि ने सिर हिलाकर मान लिया । उस मेहमान ने सुराही उठाकर पास खड़े तमाम शिष्यों को शराब देते हुए कहा : “तुम लोग भी खूब शराब पीओ, क्योंकि तुम्हारे गुरु ने इसकी इजाजत दे दी है ।”



२२. वाङ्ग छी फिर हैरान हो गया । उसने सोचा कि यह सुराही तो बहुत छोटी है, शायद हर आदमी के हिस्से एक-एक प्याला शराब भी नहीं आएगी । वह फौरन एक बड़ा प्याला उठाकर आगे बढ़ा । उसे डर था कि पीछे रहने से शायद उसे शराब नहीं मिलेगी ।



२३. यद्यपि सुराही छोटी थी, फिर भी उसके अन्दर शराब बहुत थी और हर आदमी का प्याला भरने से भी खत्म नहीं हुई। सभी लोग तीन-तीन प्याले शराब पी चुके, फिर भी सुराही खाली नहीं हुई। यह देखकर वाङ्छी फिर अचम्भे में पड़ गया।



२४. इसी समय दूसरे मेहमान ने कहा : “हम चांदनी रात में शराब पीने का मजा तो ले ही रहे हैं। अगर इस मौके पर चांद पर रहने वाली परी छाड़ अ को नाचने के लिए यहां बुलाया जाए, तो कितना अच्छा हो !”



२५. ऋषि के जवाब देने से पहले ही इस मेहमान ने मेज से एक चार्पास्टक उठाकर चांद की ओर फेंक दी ।



२६. और पलक झपकते ही चांद से एक सुन्दरी निकल आई ।



२७. दूर से उसका कद एक फुट से भी कम नजर आता था, लेकिन धरती पर उतरते ही वह सामान्य स्त्री की तरह दिखाई देने लगी। उस अपूर्व सुन्दरी ने सिर व बदन पर जो गहने पहन रखे थे, उनकी झनझनाहट मधुर संगीत की तरह सुनाई देती थी।



२८. परी छाड अ ने स्वर्ग का एक बेहद सुन्दर नाच शुरू किया ।



२६. नाचने के साथ-साथ उसने यह गाना भी गाया : “मैं एक देवी के रूप में चांद के शीतप्रासाद में अकेली रहूं या धरती पर उतरकर लोगों के साथ ?” उसका गाना बहुत सुन्दर और आवाज बेहद सुरीली थी ।



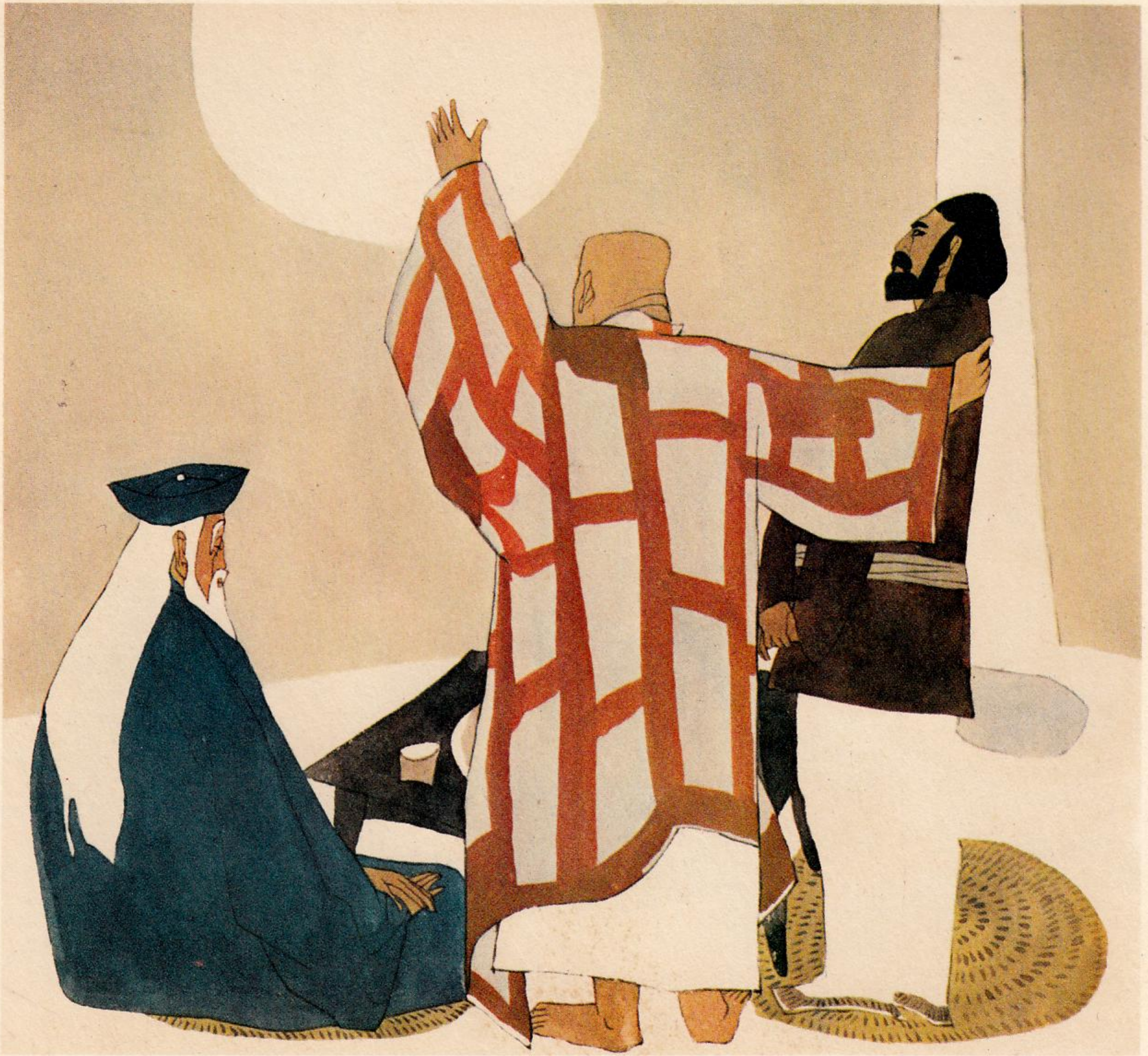
३०. जब गाना समाप्त हुआ, तो उसने फर्श पर नाचते हुए एक चक्कर लगाया और फिर मेज की ओर उड़ने लगी ।



३१. देखने वाले चकित रह गए कि परी छाड़ अ मेज पर कैसे आ गई। “टक” की आवाज के साथ ही वह मेज पर उतरी और फौरन एक चापस्टिक में बदल गई।



३२. ऋषि और उनके दोनों मेहमान ठहाका मारकर हंस पड़े। शिष्यों ने भी परी के इस अजीब कारनामे की खूब तारीफ की और वाङ्छी तो बिलकुल अवाक रह गया।



३३. कुछ देर बाद दोनों मेहमान उठ खड़े हुए और ऋषि से बोले : “आज हम बहुत खुश हुए और हमने शराब भी बहुत पी। अब हम चांद के महल में थोड़ी देर बैठेंगे और फिर आपसे बिदा लेंगे।” ऋषि ने सिर हिलाते हुए उनका सुझाव मान लिया।



३४. ऋषि ने दोनों मेहमानों को खाने-पीने की तमाम चीजों सहित चांद के महल में पहुंचा दिया। धरती से साफ-साफ दिखाई देता था कि वे लोग चांद पर बैठे खुशी से शराव पी रहे हैं। यहां तक कि उन लोगों की भौंहें व दाढ़ियां भी इतनी साफ नजर आ रही थीं, मानो आइने में उन लोगों का प्रतिबिंब झलक रहा हो।



३५. जब वाङ्छी यह सब बड़े आश्चर्य से देख रहा था, चांद की रोशनी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी और अंधेरा बढ़ता जा रहा था। एक शिष्य मोमबत्ती जलाकर ले आया, जिसकी रोशनी में केवल ऋषि अपने आसन पर बैठा दिखाई दिया और दोनों मेहमान गायब हो गए।



३६. ऋषि ने अपने शिष्यों से पूछा : “तुम लोगों ने छककर शराब पी है न ?” उन्होंने एक स्वर में जवाब दिया : “जी हां, हमने खूब शराब पी है।” ऋषि फिर बोला : “अच्छा, अब तुम लोग जाकर सोओ। कल सुबह ईंधन की लकड़ी काटने के लिए जाने में देर न हो।” सब लोग “जी हां” कहकर सोने के लिए चले गए।



३७. वाङ्ग छी अपने कमरे में आकर विस्तर पर लेट गया और सोचने लगा : “मेरे गुरु के पास तो कमाल का हुनर है । अगर मैं यह हुनर सीख लूं, तो दुनिया में कोई भी मुझे हरा नहीं सकेगा ।” यह सोचकर उसने घर लौटने का विचार फिर त्याग दिया ।



३८. वाङ्छी ने पहले की तरह रोज-रोज लकड़ी काटने का काम जारी रखा। उसने बड़ी मुश्किल से एक महीना और काटा। इस तरह का कठोर जीवन उसके लिए असहनीय हो गया। उधर उसके गुरु ने भी तब तक उसे कोई जादूगरी नहीं सिखायी थी। इसलिए उसका मन फिर डांवांडोल होने लगा।



३६. अगले दिन जब दूसरे शिष्य पहाड़ पर लकड़ी काटने चले गए, तो वाङ्छी ने ऋषि से कहा : “गुरु जी, मैं जादूगरी सीखने के लिए अपना परिवार छोड़कर बहुत दूर से आया हूँ, लेकिन यहां हर रोज केवल लकड़ी काटने का काम ही करता रहता हूँ। दरअसल ऐसा सख्त काम तो मैंने अपने घर में भी कभी नहीं किया। मैं जानना चाहता हूँ कि यह काम अभी और कितने दिन करता रहूंगा ?”



४०. ऋषि ने मुस्कराते हुए कहा : “मैं पहले से ही जानता था कि तुम यहां का कठोर जीवन सहन न कर सकोगे । अच्छा, कल मैं तुम्हें घर पहुंचा दूंगा ।” यह सुनकर वाङ्छी ऋषि से फिर विनती करने लगा : “गुरु जी, मैंने कई महीने आपके पास रहकर बड़ी मेहनत से काम किया है । अगर मैं लम्बी उमर पाने की जादूगरी आपसे सीख नहीं सकता, तो कम से कम छोटी-मोटी जादूगरी तो जरूर सिखा दें ।”



४१. ऋषि ने इन्कार नहीं किया, बल्कि वाङ्छी से पूछा : “तुम कौन-सी जादूगरी सीखना चाहते हो ?” वाङ्छी ने कुछ पल सोचकर जवाब दिया : “गुरु जी, मैंने अक्सर देखा है कि चलते समय अगर कोई दीवार आपके सामने आ जाती है, तो आप बिना चक्कर लगाए उसे बहुत आसानी से पार कर जाते हैं। आप यही जादूगरी मुझे सिखा दें, मैं सन्तुष्ट हो जाऊंगा।”



४२. ऋषि ने वाङ्छी की प्रार्थना स्वीकार कर ली और दीवार पार करने का तंत्र-मंत्र उसे सिखा दिया। इससे वाङ्छी को बहुत खुशी हुई। उसका चेहरा खिल उठा और आंखों में चमक आ गई।



४३. वाङ्छी ने जो तंत्र-मंत्र सीखा था उसे आजमाना चाहा । ऋषि ने उससे कहा : “दीवार में घुस जाओ ।” लेकिन दीवार के सामने खड़े-खड़े उसका दिल जोर से धड़कने लगा और वह उसमें घुसने का साहस नहीं कर सका । ऋषि ने उसका हौसला बढ़ाते हुए फिर कहा : “जल्दी से इसके अन्दर घुस जाओ !”



४४. वाङ् छी हिचकिचाता हुआ आगे बढ़ा, लेकिन जब वह दीवार के ठीक सामने पहुँचा, तो दीवार ने उसे रोक दिया। इससे वह बहुत निराश हुआ।



४५. ऋषि ने उससे कहा : “तुम्हारा आगे बढ़ने का तरीका ठीक नहीं । तुमको सिर झुकाकर साहस के साथ जल्दी से दीवार में घुस जाना चाहिए । इस तरह तुम दीवार को पार कर सकोगे ।” वाङ्छी दीवार से कुछ फुट के फासले पर खड़ा हुआ और सिर झुकाकर दृढ़ संकल्प से दीवार की ओर दौड़ने लगा ।



४६. अरे ! जब वाड छी दीवार के सामने पहुंचा, तो पत्थर से बनी वह ऊंची दीवार गायब हो गई । उसने मुड़कर देखा तो पाया कि वह दीवार की दूसरी तरफ पहुंच गया है । उसकी खुशी का ठिकाना न रहा ।



४७. बाड़ छी ने आगे बढ़कर ऋषि को प्रणाम किया और कहा : “गुरु जी, इस कृपा के लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ। अब मैं अपने घर लौट जाऊंगा।” ऋषि ने उसे सलाह दी : “तुम अति आवश्यक होने पर ही दीवार पार करने की जादूगरी का प्रयोग करना और किसी बुरे काम के लिए या दूसरों के सामने महज शान दिखाने के लिए इसका इस्तेमाल हरगिज मत करना, वरना यह असरदार नहीं होगी।”



४८. वाङ्छी ने अपना सामान ठीक-ठाक किया और गुरु से विदा ली। ऋषि ने उससे कुछ कहा नहीं, केवल रास्ते के खर्च के लिए उसे कुछ पैसे दे दिए और पहाड़ की तलहटी तक पहुंचा दिया।



४६. वाङ्छी पर्वत से उतर आया और अपने घर की ओर चल दिया । वह खुशी में इतना मग्न था कि अपने गुरु की सलाह बिलकुल भूल गया ।



५०. जब बाड़ छी अपने घर लौट आया, तो उसने अपनी पत्नी से पहली बात यह कही : “मैं पर्वत पर एक देवता से मिला, जिसने मुझे एक प्रकार की जादूगरी सिखायी । इसकी मदद से मैं मजबूत से मजबूत और मोटी से मोटी दीवार को भी पार कर आगे बढ़ सकता हूँ ।” यह बताते समय वह खुशी से फूला नहीं समा रहा था ।



५१. लेकिन उसकी पत्नी को विश्वास नहीं हुआ। वाङ्छी बड़े आत्मविश्वास के साथ बोला : “अगर तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा है, तो मैं अभी यह जादूगरी दिखाऊंगा।” कुछ पल सोचकर वह फिर बोला : “जाओ, हमारे तमाम पड़ोसियों को बुला लाओ। मैं अपनी जादूगरी सबको दिखाऊंगा, ताकि उन्हें भी मालूम हो जाए कि वाङ्छी अब एक साधारण आदमी नहीं रहा। साथ ही, मेरी जादूगरी देखकर उन लोगों को अपनी जानकारी बढ़ाने का भी एक अच्छा मौका मिलेगा।”



५२. बहुत-से पड़ोसियों ने आकर 'वाङ छी को घेर लिया। उसने अपनी टोपी उतारकर अपनी पत्नी को थमा दी। वह कुछ कदम पीछे हटा और फिर मंत्र पढ़ता हुआ सिर झुकाकर तेजी से दीवार की ओर दौड़ा।



५३. “भट” की आवाज हुई और उसके साथ ही वाङ्ग छो जमीन पर गिर पड़ा, क्योंकि उसका सिर दीवार से टकरा गया था। उसकी पत्नी और पड़ोसी दौड़कर फौरन उसके पास आए। उन्होंने देखा कि वाङ्ग छो के माथे पर बड़ा-सा गुलमा पड़ गया है।



५४. उसकी पत्नी हंसने लगी और पड़ोसी भी ठहाके लगाने लगे । वाङ्छी का चेहरा शर्म से लाल हो गया । वह हाथों से अपना सिर मलता हुआ चिल्लाने लगा : “हाय, ताओ धर्म का वह पाखंडी ऋषि ... उसने मुझे धोखा दिया ! आह, मेरा सिर फटा जा रहा है ! ...”

प्रसिद्ध चीनी क्लासिकी कथासंग्रह
“‘ल्याओचाए’ सदन की विचित्र कथाएं”
से रूपान्तरित

१. पाए छ्यूल्येन
२. आपाओ
३. लाओशान पर्वत का ताओ ऋषि
४. देवद्वीप
५. हुड्यवी

劳山道士

曹作锐 改编

杜大恺 绘画

*

外文出版社出版

(中国北京百万庄路24号)

民族印刷厂印刷

中国国际书店发行

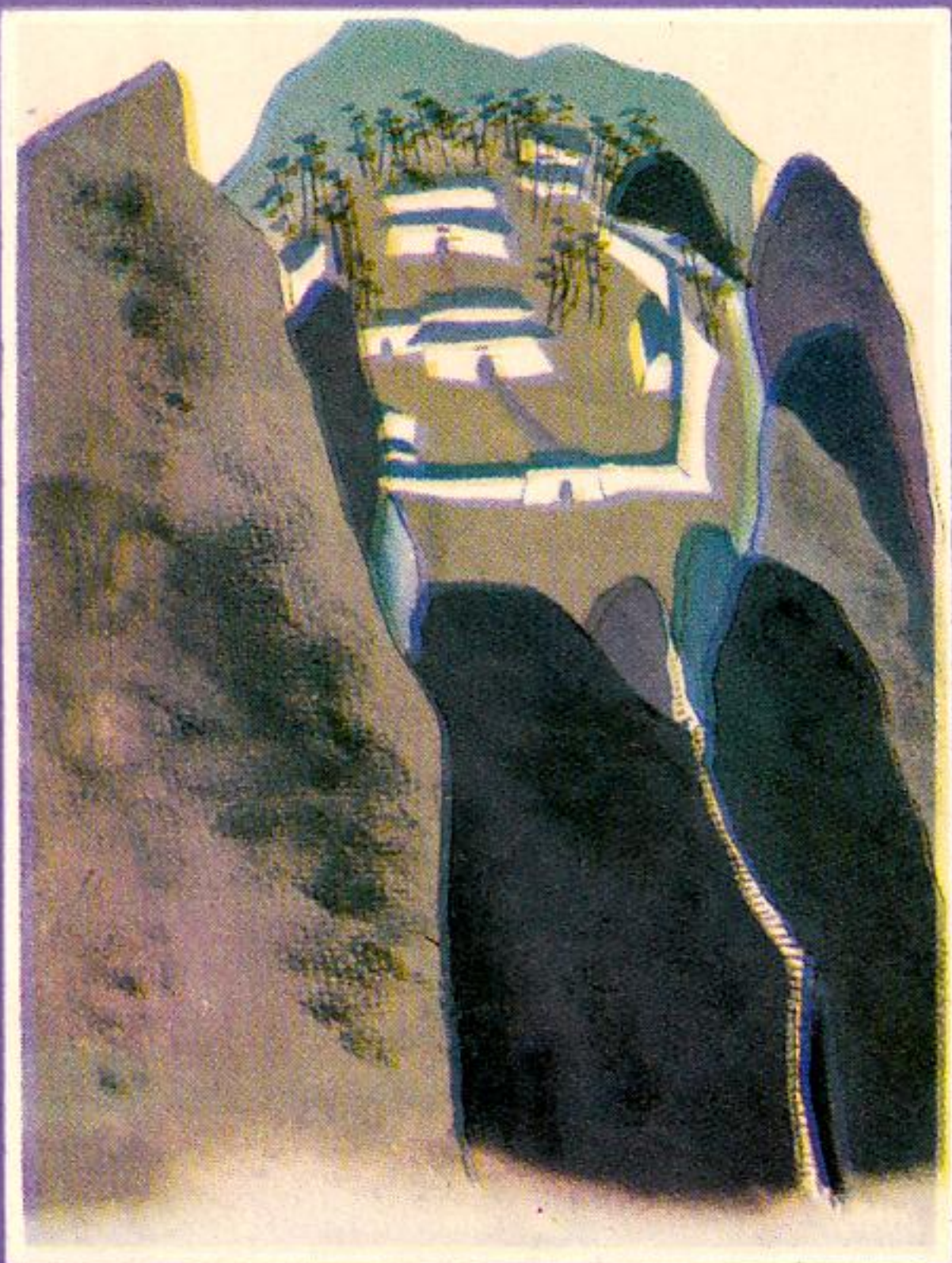
(北京399信箱)

1984年(20开)第一版

编号:(印地)8050—2359

00140

88—H—251P



यह चित्रकथा “‘ल्याओचाए’ सदन की विचित्र कथाएं” नामक सुप्रसिद्ध चीनी क्लासिकी कथासंग्रह की “लाओशान पर्वत का ताओ ऋषि” नामक कथा के आधार पर रूपान्तरित है।

संक्षिप्त कथा इस प्रकार है : वाङ् छी नामक आदमी ताओ धर्म के एक ऋषि से जादूगरी सीखने लाओशान पर्वत पर गया, लेकिन वहां के कठोर जीवन से घबरा गया और मामूली-सी जादूगरी सीखकर दो महीने बाद ही अपने घर लौट आया। ऋषि ने उसे सलाह दी थी कि जो भी जादूगरी उसने सीखी थी, उसका प्रयोग किसी बुरे काम के लिए अथवा दूसरों के सामने केवल अपनी शान दिखाने के लिए कदापि न करे। किन्तु वाङ् छी ने घर लौटने के बाद गुरु की सलाह के विपरीत अपनी जादूगरी दिखाने की कोशिश की, जिसमें वह न केवल असफल रहा बल्कि दीवार से सिर टकरा जाने के कारण बुरी तरह घायल भी हो गया।